प्राक्कथन

आरम्भिक काल से ही मनुष्य अपने विचारों तथा भावनाओं को व्यक्त करने का प्रयास करता रहा है। इसी अभिव्यक्ति के फलस्वरूप विभिन्न भाषाओं तथा कलाओं का निमार्ण मानव द्वारा किया गया। संगीत की उत्पत्ति के विषय में जीव–विज्ञान के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि भाषा के निमार्ण से पहले ही संगीत का उद्भव हो चुका था, तथा प्राचीन सभ्यता का अभिन्न अंग संगीत को स्वीकारा गया था। संगीत आरम्भिक काल से ही विद्यमान था, जो मानव के क्रमिक विकास के साथ परिवक्व होता गया। भारत की सामाजिक व्यवस्था व सस्कृति पूर्ण रूप से धर्म प्रधान मानी गया है, जिस कारण भारत की संस्कृति का अध्ययन चाहे जिस भी परिपेक्ष्य में किया जाए, उसमें धर्म अवश्य ही देखा जा सकता है। इसी कारण भारतीय संगीत में भी धर्म का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। जिस कारण संगीतविदो् द्वारा संगीत को नाद वेद की संज्ञा प्रदान की गयी है और संगीत की उत्पत्ति के कारक के रूप में ब्रह्मा जी को स्वीकारा गया, जो सम्पूर्ण सृष्टि के सृजनकर्ता माने जाते है और ब्रह्मा जी से यह संगीत की विद्या शिव जी, सरस्वती माता तथा नारद जी को प्राप्त हुयी तत्पशचात् यक्ष, किन्नर आदि को प्राप्त हुयी, फिर भरत आदि मुनिओं द्वारा संगीत की शिक्षा प्राप्त की गयी और संगीतरूपी अर्शिवाद पृथ्वी पर मनुष्यों को प्राप्त हुआ।

मानव सभ्यता के आरम्भ से ही संगीत मानव के स्वभाव का अभिन्न अंग रहा है, जो काल के परिवर्तन के साथ सुव्यवस्थित होता गया। सर्वप्रथम संगीत का उपयोग वेदों के उच्चारण में एक लयबद्ध रूप में हुआ, तत्पश्चात् लय के साथ रंजकता के सृजन हेतु स्वर तथा स्वर वाद्यों का आरम्भ हुआ तथा गेय रूप में मंत्रों के उच्चारण के साथ वाद्यों का प्रयोग किया गया व मंत्रों तथा यज्ञ आदि में ईश्वरीय उपासना में संगीत का प्रयोग आरम्भ हो गया। संगीत को तीन रूप में स्थापित किया गया– गायन वादन तथा नृत्य। संगीत की इन तीनों विधाओं के साथ धार्मिक आस्था के तत्व स्पष्ट रूप से देखने को मिलते है। इसी कारण वाद्यों के संदर्भ में अध्ययन करने पर प्रत्येक वाद्य किसी न किसी देवी–देवता के साथ संबद्ध होने की बात ग्रन्थों आदि में प्राप्त होती है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध संगीत रत्नाकर के वाद्याध्याय पर मुख्य रूप से केंद्रित है, संगीत में जिस प्रकार का वाद्यों का प्रयोग किया जाता है, उसके आधार पर प्राचीन संगीत के आचार्यों द्वारा

वाद्यों को चार भागों में वर्गीकृत किया गया है– तत्, सुषिर, अवनद्ध तथा घन। जिसे संगीत दामादर में पं० शुभांकर द्वारा इस प्रकार वर्णित किया गया है– तत् वाद्यों का वादन देवता आदि के द्वारा किया जाता है, सुषिर वाद्यों को गंधर्व आदि के प्रयोग का विधान कहा गया है, अवनद्ध वाद्यों का वादन राक्षसों द्वारा तथा किन्नरों द्वारा घन वाद्यों के वादन की बात कही गयी है।

ततं वाद्यंतु देवानां गंधर्वाणां च शौषिरम्।
आनद्धं राक्षसानांतु किन्नराणां घनं विदुः।
निजावतारे गोविंदः सर्वमेवानयत क्षितौ।।[(1)]

वाद्य शब्द का अर्थ है– वादनीय या वादन के योग्य। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों आदि में वाद्य के तीन अन्य शब्द प्राप्त होते है– वाद्य, वादित्र तथा आतोद्य। इस प्रकार वाद्य या वादित्र के सन्दर्भ में तत् तथा सुषिर वाद्यों को प्रयोग किया जाता है तथा अवनद्ध वाद्यों व घन वाद्यों के संदर्भ में आतोद्य शब्द प्रयोग होता है, आतोद्य का अर्थ–ताडित या आघात द्वारा वादित होने वाले वाद्य कहे है।

संगीत रत्नाकर को सप्तध्यायी के रूप में जाना जाता है। संगीत रत्नाकर को सप्ताध्यायी कहे जाने का कारण यह है कि, यह सात अध्यायों से युक्त ग्रन्थ है जो संगीत की समस्त विधाओं का ज्ञान देने वाला एक महान ग्रन्थ है। संगीत रत्नाकर एक ऐसा ग्रन्थ है, जिससे परिचय संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के प्रथम दिन से ही हो जाता है तथा विद्यार्थी समय के साथ–साथ संगीत रत्नाकर के महत्व को समझता जाता है। उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय संगीत पद्धिति का सर्वमान्य ग्रन्थ संगीत रत्नाकर को माना जाता है। संगीत रत्नाकर में स्वरगताध्याय–स्वरशास्त्र सम्बन्धित जानकारी, रागविवेकाध्याय–राग के विभिन्न शास्त्रगत नियम, प्रकीर्णकाध्याय–संगीत के प्रदर्शन से सम्बंधित, प्रबन्धाध्याय–संगीतोपयोगी रचनाओं, छन्द आधारित, तालाध्याय–ताल से सम्बन्धित, वाद्याध्याय–वाद्य वर्गीकरण तथा वाद्यों का सम्पूर्ण परिचय, नर्तनाध्याय–नृत्य का समस्त वर्णन प्राप्त होता है।

देवगिरि के सिंहण नरेश के दरबार में रचित यह महान ग्रन्थ 13वीं शताब्दी में रचा गया तथा 14वीं शताब्दी में इस महान ग्रन्थ पर टीकाओं की रचना आरम्भ हो गयी थी। शोधार्थी द्वारा

---

(1) पं० शुभांकरकृत–संगीत/दामोदर कैलाश पंकज श्रीवास्तव/संगीत वाद्य–वादन अंक 1975/पृ० 7

इस महान ग्रन्थ को अपने शोधकार्य का कार्य क्षेत्र चुना गया है, शोधार्थी को स्वंय भी इतिहास को जानने की उत्सुकता के फलस्वरूप ही संगीत रत्नाकर का अध्ययन आरम्भ किया गया। शोधर्थी का शोध विषय **"वर्तमान परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में संगीत रत्नाकर में वर्णित तंत्री वाद्यों का अध्ययन"** है, जिस कारण शोधकार्य का केन्द्र संगीत रत्नाकर के वाद्याध्याय पर ही केन्द्रित है। जिसमें वाद्याध्याय में वर्णित तंत्री वाद्यों का वर्तमान रूप खोजने का प्रयास किया गया है।

(आकांक्षा बाजपेयी)

****